



इटली। भारतीय राजदूत के साथ आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात ब्र.कु.शीलू समूह चित्र में।



वाराणसी। बाढ़ पीड़ितों को अनाज, पानी तथा अन्य आवश्यक चीजें वितरित करते हुए ब्र.कु.सरोज, ब्र.कु.चंदा, ओ.एन. उपाध्याय तथा ब्र.कु.बिपीन।



जयपुर-मानसरोवर। पुलिस निरीक्षक अजीत सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सरिता एवं ब्र.कु.शशि।



सुन्दर नगर (हि.प्र.)। एचआरटीसी के क्षेत्रीय प्रबंधक उत्तमचंद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शिखा।



महू। एक्जीक्यूटिव आफिसर आलोक गुप्ता को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.किरण।



कोटा। महापौर डॉ.रत्ना जैन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.ज्योति।



दादी बृजपुष्पा को सर्व ने दी स्नेहांजलि

यज्ञ की आदि रत्न सर्व की स्नेही दादी बृजपुष्पा जो यज्ञ की स्थापना के समय अपनी पाँच बहनों के साथ समर्पित हुई थीं, जिन्हें बाबा "सिक्स लक्की सिस्टर्स" कहकर पुकारते थे। ऐसी यज्ञ स्नेही दादी ने 20-9-13 को अमृतवेले 4.30 बजे अपना पुराना शरीर त्याग बापदादा की गोद ली। आपने भारत के विभिन्न स्थानों पर सेवाएं की। जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तब दादी मनोहरइन्द्रा मधुबन में रहने लगी तब आपने करनाल (हरियाणा) की सेवाओं को अच्छी तरह सम्भाला और सबकी बहुत प्यार से पालना की।

आपके जीवन में गम्भीरता और रमणीकता का, स्नेह और शक्ति का बहुत अच्छा बैलेन्स था। कुछ समय से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। आपका ग्लोबल अस्पताल में इलाज चल रहा था। समस्त ब्राह्मण परिवार ने अपनी स्नेहांजलि अर्पित की।



ब्र.कु.निमु ने किया पार्थिव देह का त्याग

ब्र.कु.निमु जो मुम्बई नेपन्सी रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर समर्पित रूप से सेवाएं प्रदान कर रहे थी, उन्होंने 11-9-13 को अपने पार्थिव देह का त्याग किया। आपने अपने आध्यात्मिक जीवन से अनेक आत्माओं का कल्याण किया।

सदा स्वस्थ जीवन स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

हमारा शरीर प्रकृति के पांच तत्वों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) से बना हुआ ही है। यानि हमारा शरीर भी प्रकृति का ही छोटा रूप है। जैसे कोई बड़ा कॉलेज या भवन बनाया जाता है तो उससे पहले उस भवन का छोटा मॉडल बनाकर काँच की पेंटी में रखा जाता है। जिसे देखकर लोग समझ जाते हैं कि भवन कैसा दिखाई देगा। उसमें कितने दरवाजे, खिड़कियाँ, सुविधाएँ होंगी। इसी प्रकार इस शरीर रूपी मॉडल को पूरा समझने के बाद हम बेहद प्रकृति को भी आसानी से समझ सकते हैं। हम दिन में बार-बार पानी क्यों पीते हैं? क्योंकि हमारे शरीर का 75 प्रतिशत से भी ज्यादा भाग पानी से बना हुआ है। अतः जब शरीर में पानी की कमी होती है तो हमें प्यास लगती है और हम पानी पीते हैं। इसी प्रकार भोजन भी करते हैं। दिन-रात आक्सीजन के रूप में हवा लेते हैं। जठर अग्नि पचाने का कार्य करती है। शरीर में खाली जगह में आकाश तत्व होता है। इस प्रकार प्रकृति इस शरीर की रचयिता है, माँ है। शरीर प्रकृति का बना होने के कारण प्रकृति के नियम ही इस पर लागू होते हैं। प्रकृति के नियमों की अवहेलना करने पर, भंग करने पर, भूलने पर शरीर को भी दण्डित होना पड़ता है।

शरीर रूपी प्रकृति को समझने के लिए एक और उदाहरण लेते हैं -जैसे उस बेहद प्रकृति में आपदाएं आती हैं, उसी प्रकार से इस शरीर में भी आपदाएँ रूपी क्रियाएँ होती हैं। दोनों ही आपदाओं का कारण असन्तुलन है। तो देखेंगे कि जिस प्रकार से बेहद की प्रकृति में तूफान आता है, उसी प्रकार हमारे शरीर में वायु विघ्न पैदा करती है। वहाँ मूसलाधार बारिश तो यहाँ दस्त लगते हैं। वहाँ सुनामी तो यहाँ उल्टियाँ होती हैं। वहाँ अकाल पड़ता है तो यहाँ बुखार आता है। वहाँ भूकम्प होता है तो यहाँ हृदयघात होता है। इसी प्रकार से अन्य आपदाओं को भी समझ सकते हैं। इन आपदाओं रूपी विघ्नों को दूर करने के लिए हमें शरीर रूपी प्रकृति को समझना होगा।

अनुभव - आन्ध्रप्रदेश, चित्तूर की ब्र.कु.वसुधा आठ वर्षों से उच्च रक्तचाप, 38 वर्षों से मेटल एलर्जी, 2 वर्षों से एसीडिटी, 30 वर्षों से धूल से एलर्जी, मोटापा (वजन 95 किलो) आदि भयंकर बीमारियों से ग्रसित थी। प्रति माह हजारों रूपये डाक्टर्स की फीस, टेस्ट, दवाइयों पर खर्च होता था। सेवा का समय भी नहीं मिलता था। अभी स्वर्ण आहार पद्धति अपनाते ही एक डेढ़ मास में सभी बीमारियाँ खत्म हो गई। वजन भी 23 किलो कम हुआ। सच्चे योगी जीवन का अनुभव हो रहा है।



ब्र.कु.ललित, एकाउण्ट आफिसर, शांतिवन

मनोबल विकसित करता है अध्यात्म

मानसिक प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने के लिए तीन चीजें चाहिए। जो भगवान ने गीता में कहा पहली बात - अध्ययन। अध्ययन अर्थात् ज्ञान का अध्ययन। आध्यात्मिक ज्ञान वो शक्ति है, जो मनोबल को विकसित करता है। जिससे हमारी बुद्धि के अंदर भी एक शक्ति का संचार होने लगता है। इसलिए आज की दुनिया के अंदर जागृति जरूर आयी है। हाँ, ये करना चाहिए, लेकिन जैसे कहा कि यही प्राब्लम है कि बड़े-बड़े कार्य के लिये हमने दिन भर दिया और फिर कह दिया टाइम नहीं है। अगर इसकी जागृति आये तो समय निकालना आसान हो जाता है। क्योंकि कौन व्यक्ति आने वाले समय में इसके शिकार बनना चाहते हैं। कई सोचते हैं कि जरूरी थोड़े ही है कि हम उसके शिकार बनेंगे, हम अभी तो ठीक है ना। लेकिन आने वाला समय जो है वो ठीक नहीं है। दिन प्रतिदिन हम एक ऐसे नाजुक समय से गुजरने लगे हैं। नाजुक समय क्यों कहती हूँ? क्योंकि कोई दिन ऐसा खाली नहीं जाता है कि जब कोई परिस्थिति न हो। कोई दिन ऐसा खाली नहीं, जिसमें कोई समस्या न आई हो, कोई घटना न घटी हो। जिस दिन के लिए हम कहें कि आज का दिन अच्छा गया। आज कुछ नहीं घटा, ऐसा कोई दिन खाली नहीं जाता है जीवन के अंदर। समय का संकेत क्या है? दिन प्रतिदिन ये समस्याएँ बढ़ेंगी या कम होंगी, आपका विवेक क्या कहता है? आने वाले समय में ये परिस्थितियाँ बढ़ेंगी या कम होंगी, तनाव के कारण बढ़ेंगे या कम होंगे। आपस में मतभेद बढ़ेंगे या कम होंगे। कलह-क्लेश के कारण बढ़ेंगे या कम होंगे। मिस अंडर स्टैंडिंग बढ़ेंगी या कम होंगी। मनुष्य की कमजोरियाँ बढ़ेंगी या कम होंगी। आज थोड़ा गुस्सा आता है लेकिन फिर भी मनुष्य कहता है कि गुस्सा करना चाहता नहीं हूँ लेकिन क्या करें परिस्थिति ऐसी है, जो गुस्सा आ जाता है। तो ये कमजोरियाँ बढ़ेंगी या कम होंगी। यदि हमने महसूस कर लिया कि मेरे में एक ही कमजोरी है। मुझे गुस्सा बहुत जल्दी आ जाता है। उस व्यक्ति को अगर कहो कि कमजोरी है, तो छोड़ दो। तो क्या

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा



कहेगा - इसके बिना काम कैसे चलेगा। गुस्से के बिना तो काम ही नहीं होता है। अर्थात् कमजोरी है, उस कमजोरी को ही जीवन चलाने का आधार बना लिया है। तो ये भीतर से हमें और कमजोर करेगा या सशक्त करेगा, क्या करेगा? विवेक अपना यूज करो कि ये कमजोरी के आधार पर जीवन जितना हम चलाते जा रहे हैं उससे हमारी मानसिक प्रतिरोधक शक्ति कम होती जा रही है और ये कमजोरियाँ बढ़ रही हैं। तो डिप्रेशन के शिकार होंगे या नहीं होंगे, यह तो स्वभाविक है। इसलिए मन को सशक्त करने के लिए भी ये तीन चीजें आवश्यक हैं। कौन सी? सबसे पहले मन को भी अच्छा भोजन चाहिए। मन का भोजन है चिंतन। तो कौन सा चिंतन चाहिए? आध्यात्मिक चिंतन। क्योंकि आज दुनिया के अंदर परचिंतन बहुत है, व्यर्थ चिंतन बहुत है। किसी के पास भी चले जाओ तो क्या बात करने के लिए विषय होता है। फलाने ने ऐसे प्राब्लम क्रियेट कर दिया, उसने ऐसा कह दिया, उसने ऐसा कर दिया, यही परचिंतन, व्यर्थ चिंतन का तो विषय होता है। जिससे कोई प्राप्ति नहीं लेकिन मनुष्य के अंदर इतनी कमजोरी बढ़ गयी है कि व्यर्थ चिंतन का शिकार बनता जा रहा है। उसको छोड़ना चाहते हुए भी, छोड़ नहीं पाता है। यहाँ लोग आते हैं, वर्णन करते हैं, सोचते हैं, मन को हल्का कर रहे हैं, हल्का नहीं हो रहा है। उसे बार-बार वर्णन करने से वो संस्कार बन रहा है। वह बढ़ता जा रहा है। इसीलिए मन के लिए स्वस्थ भोजन है - आध्यात्मिक चिंतन। ये आध्यात्मिक चिंतन का स्रोत कहां है? हमारे यहाँ ऐसे सेवाकेंद्र हैं, जहाँ आध्यात्मिक चिंतन आपको मिलता है। कई गांव, शहर ऐसे हैं, जहाँ ये चिंतन उपलब्ध भी नहीं है। इसलिए इस आध्यात्मिक चिंतन के लिये नित्य अध्ययन करो, श्रद्धा के साथ, यही भगवान ने कहा है, जिससे सर्व पापों से मुक्त हो जायेंगे।



सूरत-वराछा। पुलिस कर्मचारियों को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक मर्म स्पष्ट कर रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.हर्षा व ब्र.कु.अनिषा समूह चित्र में।